



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (1)
PART II—Section 3—Sub-section (1)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 228]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जून 21, 1991/ज्याइस्था 31, 1913

No. 228]

NEW DELHI, FRIDAY, JUNE 21, 1991/JYAISTHA 31, 1913

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

जल-भूतल परिवहन मंत्रालय

(पत्तन पथ)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 21 जून, 1991

अनुसूची

पारादीप पत्तन कर्मचारी (भर्ती, बरिष्ठता और पदोन्नति) (संशोधन)
विनियम 1991

महापत्तन न्यास अधिनियम 1963 (1963 का 38) की धारा 28 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए पारादीप पत्तन न्यास की न्यामी बोर्ड इसके द्वारा "पारादीप पत्तन कर्मचारी (भर्ती, बरिष्ठता और पदोन्नति) विनियम 1967 के संशोधन के लिए निम्नलिखित विनियम बनाती है बशर्ते कि उक्त अधिनियम की धारा 124 की उपधारा (1) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार का अनुमोदन प्राप्त हो।

1. लघु शीर्ष और प्रारम्भ :

ये विनियम "पारादीप पत्तन कर्मचारी (भर्ती, बरिष्ठता और पदोन्नति) (संशोधन) विनियम 1991 कहलाएंगे।

2. "पारादीप पत्तन कर्मचारी (भर्ती, बरिष्ठता और पदोन्नति) विनियम 1967 में (अब से मुख्य विनियमों के रूप में संदर्भित होंगे) विनियम 3 के उप विनियम (एम) के नीचे निम्नलिखित परिभाषा समाविष्ट की जाएगी इसे विनियम 3 के उपविनियम (एन) के रूप में पढ़ा जाएगा।

सा.का.नि. 314 (अ) :—केन्द्र सरकार, महापत्तन न्यास अधिनियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 132 की उपधारा (1) के साथ पठित धारा 124 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए पारादीप पत्तन न्यास मंडल द्वारा बनाए गए और इस अधिसूचना के साथ संलग्न अनुसूची में पारादीप पत्तन कर्मचारी (भर्ती, बरिष्ठता और पदोन्नति) (संशोधन) विनियम 1991 का अनुमोदन करती है।

2. उक्त विनियम इस अधिसूचना के सरकारी राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

“एन” पुनर्व्यवस्थाधिकार” का अर्थ कर्मचारी को नियमित पद जोकि स्थाई या अस्थायी या तो तत्काल या अनुपस्थिति की अवधियों की टर्मिनेशन पर धारण करने का अधिकारी होगा।

स्पष्टीकरण :—ग्रेड में पुनर्व्यवस्थाधिकार होने का लाभ ऐसे सभी कर्मचारियों के द्वारा उपभोग किया जाएगा जोकि प्रवेश के ग्रेड में पुष्टि किये गये हों या परीक्षा पूर्ण किये गये घोषित किये जाते हुए अगले उच्च पद पर पदोन्नति किये गये हों, जहां यह निर्धारित हो। लेकिन उपर्युक्त प्राधिकारी/हक इस मामले पर होगा कि ग्रेड में रहने वाला कनिष्ठतम व्यक्ति निचले ग्रेड में प्रत्यावर्तित होगा, यदि किसी समय हकवार व्यक्तियों की संख्या उस ग्रेड में उपलब्ध पदों से अधिक होती हों।

स्पष्टीकरण :—यदि व्यक्ति जिसकी पुष्टि की गई है या जिसकी परीक्षा उच्च पद में पूर्ण हो जाने की घोषणा की गई है और प्रतिनियुक्ति से वापस आता है और यदि उस ग्रेड में उसे रखने के लिए कोई रिक्ति न हो तो कनिष्ठतम व्यक्ति प्रत्यावर्तित होगा लेकिन यह कर्मचारी कनिष्ठतम है तो वह अगले निचले ग्रेड में प्रत्यावर्तित होगा जिससे पहले उसकी पदोन्नति की गई है।

3. मुख्य विनियम में विनियम (8) के उप विनियम (3) के स्थान पर निम्नलिखित समाविष्ट होंगे।

परीक्षा की अवधि के अन्तर्गत कर्मचारी को ऐसा प्रशिक्षण प्राप्त करना होगा और परीक्षाएं पास करनी होंगी जोकि नियुक्ति/पदोन्नति, स्थानांतरण आदेश में विशेष रूप से अनुबद्ध हैं, मामला जैसा भी हो।

4. मुख्य विनियमों में विनियम 9 में प्रावधानों के लिए निम्नलिखित प्रावधान प्रतिस्थापित किये जाएंगे और ये विनियम 9 के उप विनियम (1) (2) (3) (4) और (5) के रूप में पढ़े जाएंगे।

1. कर्मचारी की सेवा में पुष्टि केवल एक ही बार की जाएगी जोकि प्रवेश ग्रेड में होगी।

2. जब कर्मचारी किसी ग्रेड पर प्रारम्भिक रूप से नियुक्त किया जाता है और निर्धारित परीक्षाएं पास करता है यदि कोई हो, और नियोजता प्राधिकारी को संतुष्ट करते हुए अपनी परीक्षा पूर्ण करता है तो उसे उस ग्रेड या पद में इस बात का विचार किये बिना कि उस ग्रेड या पद में स्थाई रिक्ति उपलब्ध है, पुष्टि की जाएगी।

बशर्ते कि मामला सभी कोणों से साफ हो और कर्मचारी के पुष्टि के लिए विभागीय पदोन्नति समिति के द्वारा मामले की सिफारिश की गई हो।

3. नियोजता प्राधिकारी के द्वारा पुष्टि के विशेष आदेश जारी किये जाएंगे।

4. जब कर्मचारी की परीक्षा पर किसी ग्रेड या पद पर पदोन्नति की जाती है और नियोजता प्राधिकारी को संतुष्ट करते हुए निर्धारित परीक्षा की अवधि पूर्ण करता है तो नियोजता प्राधिकारी यह घोषित करते हुए आदेश जारी करेगा कि संबंधित व्यक्ति मफलतापूर्वक परीक्षा को पूर्ण किया है और वह उच्च ग्रेड या पद के धारण करने के लिए योग्य है जिस पर परीक्षा पर उसकी पदोन्नति की गई है।

5(क) किसी ग्रेड या पद पर परीक्षा पर सीधी भर्ती द्वारा नियुक्त कर्मचारी की जब तक पुष्टि की जाती हो या निकाया जाता हो तो विनियम 10 के अधीन वह परीक्षा पर रहे कर्मचारी की हैसियत रखी जाएगी।

(ख) किसी ग्रेड या पद पर परीक्षा पर पदोन्नति किया गया कर्मचारी इस विनियम के अधीन परीक्षा सफलतापूर्वक पूर्ण किये जाने की घोषणा करते तक या विनियम 10 के अधीन प्रत्यावर्तित होने तक वह परीक्षा पर रहे कर्मचारी की हैसियत रखते हुए बना रहेगा।

मुख्य विनियमों के विनियम 11 के उप विनियम (1) के प्रावधानों के लिए निम्नलिखित प्रावधान प्रतिस्थापित किये जाएंगे और ये विनियम

1.1 के उप विनियम (1) (ए), (1) (बी), (1) (सी) (i), (1) (सी) (ii) और (1) (डी) के रूप में पढ़े जाएंगे।

(1) स्थाई कर्मचारी :

क. किसी ग्रेड या पद पर मौलिक रूप से नियुक्त व्यक्तियों की परस्पर वरिष्ठता का निर्धारण सीधी भर्ती के समय उल्लिखित गुणक्रम के आदेश के अनुसार न होकर उस ग्रेड या पद पर पुष्टि के आदेश के आधार पर होगा।

ख. कर्मचारी जिसकी परीक्षा अवधि को बढ़ाने के कारण पुष्टि में विलम्ब हुआ हो तो वह उससे कनिष्ठ होगा जो पहले पुष्टि हो चुके हैं जैसाकि वरिष्ठता का पुष्टि के साथ संबंध है।

ग. (1) कर्मचारी जिसकी पुष्टि में अनुशासनिक कार्यवाही के कारण विलम्ब हुआ है और पूर्ण रूप से दोष मुक्त हुआ है तो उसकी पुष्टि उमके ठीक कनिष्ठ की पुष्टि की तारीख से प्रभावी होगी और तदनुसार वरिष्ठता निर्धारित की जाएगी।

घ. (ii) कर्मचारी जिसकी पुष्टि में अनुशासनिक कार्यवाही के कारण विलम्ब हुआ है और दण्ड दिया जाता है तो उससे जिसकी पहले पुष्टि हुई है कनिष्ठ हो जाएगा। जैसाकि वरिष्ठता का पुष्टि के साथ संबंध है।

च. पदोन्नति पर पुष्टि नहीं होगी, उच्च पद में वरिष्ठता का परीक्षावधि के समाप्ति के साथ संबंध नहीं होगा।

6. मुख्य विनियम के विनियम 18 में अंतिम वाक्य के रूप में निम्नलिखित प्रावधान होगा।

“सामान्यतः कर्मचारी की प्रतिनियुक्ति की अवधि तीन वर्षों के लिए होगी और प्रतिनियुक्ति की अधिकतम अवधि पांच वर्षों के लिए होगी।”

नोट :—(1) मुख्य विनियम अर्थात् पागादीप पत्तन कर्मचारी (भर्ती, वरिष्ठता और पदोन्नति) विनियम 1967 भारत के राजपत्र में जी. एस.आर. सं. 1671 में दिनांक 1-11-1967 को प्रकाशित किये गये।

(2) प्रथम संशोधन अर्थात् पागादीप पत्तन कर्मचारी (भर्ती, वरिष्ठता और पदोन्नति) संशोधन विनियम 1975 भारत के राजपत्र में जी.एस.आर. 608 में दिनांक 1 फरवरी 1975 को प्रकाशित किये गये।

[फा.सं.पी.आर.-12012/27/91-पीई-1]

प्रभोक्त जोगी संयुक्त सचिव

MINISTRY OF SURFACE TRANSPORT

(Ports Wing)

NOTIFICATION

New Delhi, the 21st June, 1991

G.S.R. 314 (E):—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 124, read with sub-section (1) of Section 132 of the Major Ports Trusts Act, 1963 (38 of 1963), the Central Government hereby approves the Paradip Port Employees (Recruitment, Seniority and Promotion) (Amendment) Regulations, 1991 made by the Board of Trustees for the Port of Paradip and set out in the Scheduled annexed to this notification.

2. The said regulation shall come into force on the date of publication of this notification in the Official Gazette.

SCHEDULE

PARADIP PORT EMPLOYEES (RECRUITMENT, SENIORITY AND PROMOTION) (AMENDMENT) REGULATIONS, 1991.

In exercise of the powers conferred by Section 28 of the Major Port Trusts Act, 1963 (38 of 1963), the Board of Trustees of the Port of Paradip hereby make the following regulations to amend the "Paradip Port Employees (Recruitment, Seniority and Promotion) Regulations, 1967" subject to the approval of the Central Government under sub-section (1) of section 124 of the said Act—

1. Short title and commencement: These Regulations may be called "Paradip Port Employees (Recruitment, Seniority and Promotion) (Amendment) Regulations, 1991.
2. In the "Paradip Port Employees (Recruitment, Seniority and Promotion) Regulations, 1967 (hereinafter referred to as the Principal Regulations), below sub-regulation (m) of Regulation-3, the following definition shall be incorporated and the same shall be read as sub-regulation (n) of Regulation-3.

“(n) “LIEN” means the right/title of an employee to hold a regular post, whether permanent or temporary, either immediately or on the termination of the periods of absence.

EXPLANATION:

“The benefit of having a lien in a grade will thus be enjoyed by all employees who are confirmed in the grade of entry or who have been promoted to a higher post declared as having completed the probation where it is prescribed.

The above right/title will however, be subject to the condition that the junior most person in the grade will be liable to be reverted to the lower grade if at any time the number of persons so entitled is more than the posts available in that grade.”

EXPLANATION:

If a person who is confirmed or whose probation in a higher post has been declared as having been completed reverts from deputation and if there is no vacancy in that grade to accommodate him, the junior most person will be reverted. If, however, this employee is the junior most, he will be reverted to the next lower grade from which he was earlier promoted.

In 3 place of sub-regulation (3) of Regulation-8 of Principal Regulations, the following shall be incorporated¹

“During the period of probation the employee will be required to undergo such training and pass such tests specifically stipulated in the order of appointment/promotion/-transfer, as the case may be.”

4. For the provision in Regulation-9 of Principal Regulations, the following provisions shall be substituted and the same shall read as sub-regulations (1), (2), (3), (4) and (5) of Regulation-9:

- (1) Confirmation shall be made only once in the service of an employee which will be in the entry grade.
- (2) When an employee initially appointed on probation to any grade or post has passed the prescribed tests, if any, and has completed his probation to the satisfaction of the appointing authority, he shall be confirmed in that grade or post, irrespective of the availability of permanent vacancy in the grade or post:

Provided that the case is cleared from all angles and the case is recommended by the Departmental Promotion Committee for confirmation of the employee.

- (3) A specific order of confirmation shall be issued by the appointing authority.
- (4) When an employee, promoted on probation to any grade or post has completed the prescribed period of probation to the satisfaction of the appointing authority, the appointing authority shall pass an order declaring that the person concerned has successfully completed the probation and he is fit to hold the higher grade or post to which he was promoted on probation.
- (5) (a) Until an employee, appointed to a grade or post on probation by direct recruitment is confirmed or is discharged under regulation-10, he shall continue to have the status of an employee on probation.
- (b) Until an employee, promoted to a grade or post on probation, is declared as having successfully completed the probation under this Regulation or is reverted under Regulation-10, he shall continue to have the status of an employee on probation.

5. For the provision of sub-regulation (1) of Regulation 11 of Principal Regulations, the following provisions shall be substituted and the same shall be read as sub-regulation (1)(a), (1)(b), (1)(c)(i), (1) (c) (ii) and (1) (d) of Regulation-11:—

“(1) Permanent Employees:

- (a) The seniority interse of persons substantively appointed to a grade or post shall be determined on the basis of order of confirmation in that grade or post and not as per the order of merit indicated at the time of direct recruitment.
- (b) The employee, whose confirmation has been delayed due to extension of probation period, shall become junior to those confirmed earlier, as the seniority shall be linked to confirmation.
- (c) (i) The employee whose confirmation has been delayed because of disciplinary proceedings resulting in complete exoneration, his confirmation shall take effect from the date of confirmation of his immediate junior and the seniority shall be fixed accordingly.
- (c) (ii) The employee whose confirmation has been delayed because of disciplinary proceedings resulting in award of penalty, shall

become junior to those confirmed earlier as the seniority shall be linked to confirmation.

- (d) Since there will be no confirmation on promotion, the seniority in the higher post shall not be linked to the completion of the probation period.

6. Regulation-18 of Principal Regulations will have the following provisions as the last sentence:

“The period of deputation of an employee shall be generally for a period of three years and the maximum period of deputation shall be for a period of five years.”

NOTE: (1) The Principal Regulations namely Paradip Port Employees (Recruitment, Seniority & Promotion) Regulations, 1967 were published vide G.S.R. No. 1671 in The Gazette of India dated the 1st November, 1967.

- (2) The first amendment namely, Paradip Port Employees (Recruitment, Seniority and Promotion) (Amendment) Regulations, 1975 were published vide G.S.R. No. 608 in the Gazette of India dated the 1st February, 1975.

[No. PR—12012/27/90—PE.I]
ASHOK JOSHI, Jt. Secy.